1987 06 01 Tribute to Charan Singh by Khushwant Singh and Dr Sarup Singh

Khushwant Singh- There was nothing—on one wall there was calendar and other large picture of Swami Dayanand Saraswati. He was obviously a staunch arya samaji. I have not met another leader of that importance who lived as simply as Chaudhary Charan Singh.

Dr. Sarup Singh- टेलीफोन आया मेरे पास की सौ रुपये चाहिए, अगले दिन लखनऊ जाना है, और जरूरी है लखनऊ जाना, और जहाज के पैसे नई है। मैंने सौ रुपया भेजवा दिया। अब सोचिए जो आदमी इतने सालों में वज़ीर रहा हो, मुख्यमंत्री भी रह रहा हो, और उसके पास सौ रुपये की दिक्कत पर जाए उसको। एक बात बताता हूं आपको- माई एक दफा माई इंग्लैंड से वापस आया, मेरी गरीब हालत थी वाहा, उधर लेकर गया था और तन्खा कट जाती थी, मैं दुखी होकर उनके पास पहुंच गया, लखनऊ। उन दिनों वो गृह मंत्री थे, मैंने कहा साहब आप मेरा काम कर दे, बोले क्या काम है। आप शिक्षा मंत्री को जानते हैं, तो बोले हां जानता हूं। आप उन्हें कह दे तो मेरी किताब लग जाए, इस्तेमाल कुछ पैसा बन जाए। उनको बोला स्वरूप सिंह एक बात याद रखो- मैं किसी को नहीं कहूंगा तुम्हारे लिए पैसा बनवाऊंगा। और रिश्तेदार के लिए बिल्कुल हरगिज़ नई कहूँगा। लेकिन अगर तुम परेशान हो, मुझे बताओ, मैं उधार ले दूंगा तुम्हारे लिए, लेकिन मैं कहूंगा किसी के लिए नहीं। अब सवाल ये पैदा होता है कि- मैं क्या समझता हूं, हिंदुस्तान के इतिहास में क्या जगह होगी उनकी। देखिये मुझे कई बातों का डर लगता है। लोगों ने समझा नई उनको ठीक तरह से। एक देहात का आदमी हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री की कुर्सी पर आकर बैठ जाए। गरीब किसान का लड़का. लोगों ने तो सौ तरह की बातें कही, किस तरह से बैठें नईं। लेकिन एक बात भूल गए लोग- जब एक गरीब का लड़का, ऊंची जगह पूछता है, तो गरीबों की क्या कैफियत होती है, आप इसका दो मिनट के लिए अंदाज़ा लगाइए। हिंदुस्तान के गांव में ये विचार गरीब से गरीब आदमी का लड़का है, अगर कोई लियाकत हो, संघर्ष करने की शक्ति हो, और दिलों जान से खिजमत करना चाहता हो गांव वालों की, गरीब आदमियों की जो ऊंची से ऊंची पैड भी देश में पा सकता है. इसे जो नैतिक शक्ति बढ़ाने वाली होती है गरीब आदमियों की, उसका अंदाज़ा लीजिए आप।

Khushwant Singh- Every time he changed a party or changed his allegiance people used to say that this is the end of Choudhary Charan Singh. Politically he is dead. He used to remind me of a well-known Hindi proverb about the jaats- you can only regard a jaat is dead, after his first death anniversary has been celebrated. Now the Chaudhary Charan Singh is no more with us, I with not the slightest doubt, not only his next death anniversary but for 100's of death anniversaries to come, whenever the subject of the peasantry of India comes in discussion, his name will be taken. with respect and his memory will remain immortal.

खुशवंत सिंह- वहां कुछ भी नहीं था- एक दीवार पर कैलेंडर था और दूसरी दीवार पर स्वामी दयानंद सरस्वती की बड़ी तस्वीर थी। जाहिर है कि वे कट्टर आर्य समाजी थे। मैं चौधरी चरण सिंह की तरह सादगी से रहने वाले इतने महत्वपूर्ण नेता से नहीं मिला।

Dr. Sarup Singh- I got a call saying that I need a hundred rupees, I have to go to Lucknow the next day, and it is important to go to Lucknow, and I don't have money for the flight. I sent a hundred rupees. Now imagine a man who has been a minister for so many years, has also been a chief minister, and he goes to him for a hundred rupees. Let me tell you one thing- once I came back from England, I was poor there, I had taken him there and my salary was cut, I reached him in despair, Lucknow. In those days he was the Home Minister, I said Sir, please do my work, he asked what is the work. Do you know the Education Minister, he said yes I do. If you tell him, my book will be published, I will earn some money. Swaroop Singh told him remember one thing- I will not ask anyone to arrange money for you. And I will never ask for a relative. But if you are in trouble, tell me, I will borrow money for you, but I will not ask for anyone. Now the question arises that- what do I think, what place will he have in the history of India. See, I am afraid of many things. People have not understood him properly. A man from the village comes and sits on the chair of the Prime Minister of India. The son of a poor farmer. People said a hundred things about how he should sit. But people forgot one thing- when a poor boy asks for a high position, then what is the condition of the poor, you can guess it for two minutes. In the villages of India, this idea is that the son of the poorest of the poor, if someone has the ability, the power to struggle, and wants to serve the villagers with all his heart and soul, the poor people who can get the highest post in the country. You can guess the moral power that increases this of the poor people.

खुशवंत सिंह- जब भी वे दल बदलते थे या अपनी निष्ठा बदलते थे, लोग कहते थे कि चौधरी चरण सिंह का अंत हो गया। राजनीतिक रूप से वे मर चुके हैं। वे मुझे जाटों के बारे में एक मशहूर कहावत याद दिलाते थे- जाट को आप तभी मरा हुआ मान सकते हैं, जब उसकी पहली पुण्यतिथि मनाई जाए। अब चौधरी चरण सिंह हमारे बीच नहीं हैं, मुझे इसमें जरा भी संदेह नहीं है, सिर्फ उनकी अगली पुण्यतिथि ही नहीं बल्कि आने वाली सैकड़ों पुण्यतिथियों तक, जब भी भारत के किसान वर्ग की बात आएगी, उनका नाम सम्मान के साथ लिया जाएगा और उनकी स्मृति अमर रहेगी।